✺ 7 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] तुम जानते हो हम राजयोग सीखते ही हैं नई दुनिया के लिए। फिर न यह पुरानी दुनिया, न पुराना शरीर होगा। आत्मा तो अविनाशी है। आत्मायें पवित्र बन फिर पवित्र दुनिया में आती हैं। नई दुनिया थी, जिसमें देवी-देवताओं का राज्य था जिसको स्वर्ग कहा जाता है। वह नई दुनिया बनाने वाला भगवान् ही है। वह एक धर्म की स्थापना कराते हैं। कोई देवता द्वारा नहीं कराते। देवता तो यहाँ हैं नहीं। तो जरूर कोई मनुष्य द्वारा ही ज्ञान देंगे जो फिर देवता बनेंगे। फिर वहीं देवतायें पुनर्जन्म लेते-लेते अभी ब्राह्मण बने हैं। यह राज़ तुम बच्चे ही जानते हो- भगवान् तो है निराकार जो नई दुनिया रचते हैं।

2] बाप भी कहते हैं जब-जब धर्म की ग्लानि होती हैं, तो पूछा जायेगा किस धर्म की ग्लानि होती है? जरूर कहेंगे आदि सनातन देवी-देवता धर्म की, जो मैंने स्थापन किया था। वह धर्म ही प्राय: लोप हो गया। उसके बदले अधर्म हो गया है। तो जब धर्म से अधर्म की वृद्धि होती जाती, तब बाप आते हैं।

3] अशान्ति होती है अपवित्रता से।

4] बाप समझाते हैं वहाँ होता ही है एक बच्चा सो भी विकार का नाम नहीं। यहाँ तो सन्यासी भी कभी-कभी कह देते हैं कि एक बच्चा तो जरूर होना चाहिए- क्रिमिनल आई वाले ठग ऐसी शिक्षा देते हैं। अब बाप कहते हैं इस समय के बच्चे क्या काम के होंगे, जबकि विनाश सामने खड़ा है, सब खत्म हो जायेंगे। मैं आया ही हूँ पुरानी दुनिया का विनाश कराने। वह हुई सन्यासियों की बात, उन्हों को तो विनाश की बात का मालूम ही नहीं। तुमको बेहद का बाप समझाते हैं अब विनाश होना है। तुम्हारे बच्चे वारिस बन नहीं सकेंगे। तुम समझते हो हमारे कुल की निशानी रहे परन्तु पतित दुनिया की कोई निशानी रहेगी नहीं।

5] अब तमोप्रधान होने कारण समझ नहीं सकते हैं। उन्हों की दृष्टि ही क्रिमिनल है। इसको कहा जाता है धर्म की ग्लानि। आदि सनातन धर्म में ऐसी बाते होती नहीं।

6] रावण को 10 शीश दिखाते हैं– 5 स्त्री के, 5 पुरूष के। यह भी समझते हैं 5 विकार हर एक में हैं, देवताओं में तो नहीं कहेंगे ना। वह तो है ही सुखधाम।

7] मनुष्य समझते हैं देवतायें भी तो बच्चे पैदा करते हैं, वह भी तो विकारी ठहरे। उन्हों को यह पता ही नहीं हैं– देवताओं को गाया ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। तब तो उन्हों को पूजा कहा जाता है।

✺ योग-

1] शान्त होने की युक्ति बताता हूँ कि मेरे को याद करो तो तुम शान्त हो, शान्तिधाम में चले जायेंगे।

2] जो सदा बाप के **याद की छत्रछाया** के नीचे रहते हैं वो स्वयं को सदा सेफ अनुभव करते हैं। माया की छाया से बचने का साधन हैं बाप की छत्रछाया। छत्रछाया में रहने वाले सदा बेफिक्र बादशाह होंगे। अगर कोई फिक्र है तो खुशी गुम हो जाती है। खुशी गुम हुई, कमजोर हुए तो माया की छाया का प्रभाव पड़ जाता है क्योंकि कमजोरी ही माया का आह्वान करती है। माया की छाया स्वप्न में भी पड़ गई तो बहुत परेशान कर देगी इसलिए सदा छत्रछाया के नीचे रहो।

✺ धारणा-

1] अशान्ति का कारण है अपवित्रता। बाप से वायदा करो कि हम पवित्र बन पवित्र दुनिया बनायेंगे, अपनी सिविल आई रखेंगे, क्रिमिनल नहीं बनेंगे तो अशान्ति दूर हो सकती है। तुम शान्ति स्थापन करने के निमित्त बने हुए बच्चे कभी अशान्ति नहीं फैला सकते। तुम्हें शान्त रहना है, माया के गुलाम नहीं बनना है।

2] हेविन में जाने के लिए दैवी गुण भी चाहिए। क्रोध नहीं होना चाहिए। क्रोध है तो वह भी जैसे असुर कहलायेंगे। बड़ी शान्तिचित्त अवस्था चाहिए। क्रोध करते हैं तो कहेंगे इनमें क्रोध का भूत है। जिनमें कोई भी भूत है वह देवता बन सकें। नर से नारायण बन न सकें।

✺ सेवा-

1] – – –